Knowledgeable Research (An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal) **ISSN 2583-6633**
Available Online: http://knowledgeableresearch.com Vol.04, No.07, July,2025

भारतीय ज्ञान परम्परा में स्त्रियों का विद्याधिकार : एक चिन्तन

*डॉ० दौलतराम
सहायक आचार्य,श्री शक्ति संस्कृत महाविद्यालय
श्री नयना देवी जी-बिलासपुर

****

शोधसार:*भारतीय ज्ञान परम्परा के इतिहास में स्त्रियों के शिक्षाधिकार को लेकर चर्चा विशेष महत्व रखती है। वेदकाल में, शिक्षा को सभी के लिए उपलब्ध कराने का प्रयास किया गया था। ऋग्वेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद आदि में गार्गी, मैत्रेयी, वाचक्नवी, घोषा जैसी विदुषी ऋषिकाओं की उपलब्धि दर्शाती है, जिन्होंने न केवल वेदाध्यन किया बल्कि दार्शनिक विवादों में भी पुरुषों के समकक्ष स्थान प्राप्त किया। गार्गी और याज्ञवल्क्य का ब्रह्मविद्या पर संवाद, उस समय की उच्चतम सांस्कृतिक उदाहरण होता है। भारतीय उपनिषदों और ब्राह्मण ग्रन्थों में स्त्रियों के ज्ञान क्षेत्र में भागीदारी का समान्य जिक्र विद्यमान है। यह उल्लेख स्त्री शिक्षा में उसकी भूमिका को मान्यता देने का कारण बनता है।*

शिक्षा केवल धार्मिक या आध्यात्मिक उद्देश्यों के लिए ही महत्वपूर्ण नहीं थी, बल्कि समाज के कार्यों और दायित्वों को निष्पादित करने के लिए भी आवश्यक माना गया था। हालांकि, उत्तरवर्ती काल में स्त्री शिक्षा के क्षेत्र में संकोच देखने को मिला जिसके पीछे सामाजिक-राजनीतिक कारण और पितृसत्तात्मक व्यवस्था का प्रभाव था। स्मृति साहित्य और मध्यकालीन व्यवस्थाएं स्त्रियों को अधिकतर गृहस्थ जीवन तक ही सीमित कर दिया गया था, जिससे उनके बौद्धिक विकास में प्रतिबंध आ गये थे। आज के समय में, समकालीन सोच में यह सवाल प्रासंगिक है कि भारतीय परंपरा में स्त्रियों की अद्वितीय बौद्धिक क्षमताओं को महत्व देना चाहिए। इस ऐतिहासिक छानबिन से, स्त्रियों का विद्याधिकार हिन्दू समाज के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण था, जिसे समकालीन शिक्षा में लिंग-समानता और ज्ञान की समुचित बढ़ावा देने के लिए पुनर्जीवित किया जा सकता है।

शब्दबिन्दु:- *विद्याधिकार, ऋग्वेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद, याज्ञवल्क्य, शिक्षाधिकार, वैदिक काल।*

****

वैदिक काल से ही स्त्रियों की शिक्षा को महत्व दिया जाता रहा है, जिसे पुरुषों की शिक्षा के साथ समान माना गया। स्त्रियों को तपस्या और शिक्षा के लिए मान्यता दी जाती थी, और उन्हें विभिन्न ज्ञान क्षेत्रों में पढ़ाया जाता था। इसके परिणामस्वरूप, शिक्षित स्त्रियों की संख्या हमेशा से पुरुषों से कम रही है। वैदिक काल में, स्त्रियाएं ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करती थीं और सभी विद्याओं का अध्ययन करती थीं। पुरुषों और स्त्रियों के शिक्षा क्षेत्र समान थे। यही कारण था कि उस समय बहुत से आदर्श ऋषिकाओं की प्रतिष्ठा हुई। ऋग्वेद में बहुत सी महान कवियों की रचनाएं पाई जाती हैं,[1] जैसे लोपामुद्रा, विश्व-वारा, आत्रेयी, अपाला, और काक्षीवती घोषा। अथर्ववेद में भी स्त्रियों के ब्रह्मचर्य की महत्वपूर्णता को उजागर किया गया है, कहते हैं कि ब्रह्मचर्य से ही कन्या अपने सही जीवनसाथी को प्राप्त करती है। उपनिषदों में कई दार्शनिक स्त्रियों की उच्च कोटि की विद्वत्ता का अंजाम मिलता है। मैत्रेयी, जो याज्ञवल्य की पत्नी थी, अमर पद प्राप्त करने की इच्छा रखती थी और वह ब्रह्मज्ञान के माध्यम से इसे हासिल करना चाहती थी।

गार्गी वाचक्नवी ने **बृहदारण्यक उपनिषद्** (3.6–8) में याज्ञवल्क्य से ब्रह्मविद्या पर गहन संवाद किया-

[1] इनके रचे हुए सूक्तों के लिए देखिए, ऋ० 1.179; 5.28; 8.91; 10.39-40 आदि।

याज्ञवल्क्य, यदिदं सर्वं जल एव,
किमस्यां जलस्य परः इति।[2]

गार्गी ने ये प्रश्न पूछे जिनसे स्पष्ट होता है कि उन्हें ब्रह्मविद्या में गहरा ज्ञान था। उनके उत्तर ने दिखाया कि वे अपने मान्यताओं में सुधार करने की क्षमता रखती हैं। गार्गी के विचार और प्रश्न मार्गदर्शक बन सकते थे उस समय की समाज के लिए। उनकी जिज्ञासा ने स्पष्ट किया कि वे एक ऊँचा स्तर का विचारक और अध्यात्मवादी थीं। गार्गी के प्रश्न ने देखने वालों की सोच को विस्तारित करने में मदद की। उनकी विद्वता ने उन्हें वहाँ उभारा जहाँ पूर्व में कोई नहीं पहुँच सका था। गार्गी की ऊर्जा और दृढ़ संकल्पना ने उन्हें अनसुलझे मुद्दों पर विचार करने की प्रेरणा दी। उनके सवालों में बुद्धिमत्ता और विवेक दिखाई दिए जो आम लोगों को मतभेद समझने में मदद कर सकते थे। गार्गी की सोचने की शैली ने उस समय की सोच को आधुनिक सुधार के लिए प्रेरित किया। उनका स्वाध्याय और उत्तर विलोम की दृढ़ता ने उन्हें एक विचारक और शिक्षिका के रूप में माना गया। गार्गी की अद्भुत प्रस्तुति ने सबको विचार करने पर आमंत्रित किया। उनकी गहरी ज्ञानविद्या ने सबके मनोबल को उन्नत करने में मदद की। गार्गी की उम्रदराज किस्मत ने उन्हें उत्कृष्टता की ओर अग्रसर किया। उनके अंतर्मन की गहराई ने उन्हें अलौकिक सिद्धांतों के समीप ले जाया। गार्गी के आत्मविश्वास ने उन्हें अपने दृढ़ सिद्धांतों पर खड़ी रहने में सहायता पहुंचाई। उनकी विचारशीलता ने उन्हें अनंत सत्य की खोज में अग्रसर किया। गार्गी की प्रभावशाली व्यक्तित्व ने उन्हें समाज की आलोचना करने में साहस प्रदान किया उनकी उच्च भाषा और भावुकता ने उन्हें सजीव विवादों में भाग लेने के लिए प्रेरित किया। गार्गी ने उस समय की साहित्यिक और धार्मिक चर्चाओं में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

मैत्रेयी ने भी याज्ञवल्क्य से अमरत्व के ज्ञान की जिज्ञासा की-

यदरे न मृतेन, किं
तदरेन कुर्यात्। [3]

याज्ञवल्वय ने मैत्रेयी को सबसे उच्च ब्रह्मज्ञान की शिक्षा दी। उपनिषद काल में गार्गी वाचक्नवी एक प्रमुख दार्शनिक महिला थी।[4] उन्होंने जनक की सभा में याज्ञवल्क्य से दर्शनिक रहस्यों का समाधान किया था। मैत्रेयी और गार्गी उस युग से यादगार रहीं हैं। उपनिषद काल में, कन्याओं को विद्वान बनाने की प्रथा की प्रसिद्धि थी।[5] लोग हर मानते थे कि उस समय की कन्याएं जो विद्वान

[2] बृहदारण्यक उपनिषद् 3.6.1

[3] बृहदारण्यक उपनिषद् 2.4.12

[4] ब्रह्मचर्येण कन्या यवानं विन्दते पतिम् । अथर्व० 9.51.8।

[5] बृहदारण्यक 2.4.3।

बनने की क्षमता रखती थीं, उन्हें पुत्री के रूप में प्राप्त करने के लिए विशेष योजनाओं का एलान करते थे।

अयम् सोमो ऋषिकाया अपालायै बृहस्पतिः। अवातीरदभिशस्तये।[6]

अपाला ऋषिका सोम से यहाँ आरोग्य और ज्ञान की प्राप्ति की आशा करती हैं। वह इस स्थल पर अपने आत्मा की परिष्कृतता और मन की पूर्णता की खोज में विशेष रुप से लगी हुई हैं। उन्हें उम्मीद है कि इस संगम के माध्यम से वे अपने जीवन को सार्थक बना सकेंगी। वे यहाँ आत्मा को शुद्ध करने और विशेषज्ञता प्राप्त करने के लिए आती हैं। सोम से मिलने के बाद उन्हें ध्यान में लगने की सक्रियता और मानसिक समृद्धि की सामर्थ्य मिलती है। सोम की शांति और शक्ति उन्हें आध्यात्मिक सफलता की अद्वितीय अनुभूति प्रदान करती है।

ऋषिका सोम के साथ वार्ता करने के लिए उन्हें शांति का एक अद्भुत अहसास होता है। उन्हें ऐसा लगता है कि सोम की विशेषज्ञता और सोम की ऊर्जा ने उन्हें एक नई दृष्टि प्रदान की है। इस संगम के माध्यम से उन्हें जीवन के महत्वपूर्ण मुद्दों पर सुझाव और मार्गदर्शन मिलता है। अपाला ऋषिका सोम के ज्ञान की गहराई में समाहित होकर अपने आत्मा के विकास और स्थायिता के माध्यम से आत्मानुवाद की ओर बढ़ती हैं। वे इस संगम के माध्यम से अपने जीवन में संतुलन और सुख-शांति की खोज जारी रखना चाहती हैं। उन्हें प्राकृतिक उपचार, योग और आध्यात्मिक विज्ञान के माध्यम से आत्मा को शुद्ध और संतुलित बनाने की चाह होती है। ऋषिका सोम के साथ उन्हें ऐसा मानसिक और भावनात्मक संबंध मिलता है कि उन्हें संगीत समृद्धि और आनंद की भावना होती है। सोम से मिलने के बाद उन्हें एक नया दृष्टि का सामर्थ्य प्राप्त होता है और उन्हें नए उत्साह की प्रेरणा मिलती है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि अपाला ऋषिका सोम से एक नया संदेश और मार्ग मिलने की आशा करती हैं। वह यहाँ से भाग्यशाली और समृद्ध प्राणी के रूप में निर्माणित होकर निकलना चाहती हैं।

कालान्तर में कन्याओं को शिक्षा देने के लिए राजाओं ने शिक्षिकाओं को नियुक्त किया जिनमें स्त्रियाँ शिक्षा देती थीं। इन स्त्रियों को आचार्या और उपाध्याया कहा जाता था। पतञ्जलि ने औदमेध्या और उसके शिष्यों का जिक्र किया है। उन्होंने स्त्री-छात्रों की उपाधियाँ अध्येत्री और माणविका कही हैं। कठी वृन्दारिका कठ-शाखा की श्रेष्ठ छात्रा थी। वेदकालीन चरणों में स्त्रियाँ वेद भी पढ़ती थीं। ऋग्वेद की ववृच शाखा पढ़नेवाली स्त्रियाँ बह्वची

[6] ऋग्वेद 8.91.1

कही जाती थीं। पाणिनि ने अस्त्र-शस्त्र विद्या में कुशल स्त्रियों के बारे में भी बताया है। आश्वलायन गृह्य सूत्र में प्रतियोगिता संबंधी नियमों से स्त्रियों के ब्रह्मचर्य व्रत के पश्चात् स्नातिका बनने का उल्लेख है। आपस्तम्ब धर्मसूत्र में स्त्री-आचार्यों की व्येवस्था की गई है।

अर्थशास्त्र के गणिकाध्यक्ष प्रकरण में राजाओं ने गणिका, दासी और अभिनेत्री बनने बाली कन्याओं की शिक्षा के लिए आचार्यों को नियुक्त किया। इनकी शिक्षा विभिन्न कलाओं में समाप्त होती थी, जैसे कि गीत, रंगमंच, पाठ्यक्रम, नृत्य, नाट्य, अक्षर, चित्र, संगीत उस्ताद बजाना, फूल गुलल, संवाद, वेशभूषा पहनाना और अन्य कलाओं।

भारतीय साहित्य में, स्त्रियों को अनेक विद्याओं में पारङ्गत होने के उल्लेख मिलते हैं। उनमें से कुछ उदाहरण हैं जैसे राजकुल की दासियों में 64 विद्याओं में विशारद और नृत्य, वाद्य और संगीत पर कुशल होती थीं। भारतीय काव्य-साहित्य में कई स्त्री-रचित गाथाएं उल्लिखित हैं, जैसे हाल की गाथा-सप्तशती में मिलती है।[7] परवर्ती युग में,[8] स्त्रियों द्वारा रची गई कविताएं और उनकी प्रशस्तियाँ भारतीय काव्य-साहित्य में देखने को मिलती हैं। राजशेखर ने स्त्री-कवियों के बारे में बताया कि स्त्रियाँ भी कवि हो सकती हैं, जैसे राजकन्याएं, महामाताएं, गणिकाएं और भार्याएं। इस युग में, शंकर और मण्डन मिश्र के बीच हुए विवाद के बारे में 'शंकर-दिग्विजय' नामक ग्रंथ में भी चर्चा है।[9] इस ग्रन्थ से पता चलता है कि इन महापंडितों की जय-पराजय का निर्णय करने के लिए मण्डन मिश्र की पत्नी निर्णायक नियुक्त हुई थी। स्त्रियों को विद्या प्राप्त करने में किसी धार्मिक रुकावट का बीचना नहीं था, जैसे कि सरस्वती और पार्वती को विद्या की अधिष्ठात्री देवी के रूप में सोचा जाता है।

बौद्ध संस्कृति में स्त्रियों के अध्ययन के लिए सही सुविधाएं उपलब्ध कराई गई थी। कई भिक्षुणियों ने संघ में शरण ली और वहाँ रहकर उच्च विद्वत्ता हासिल की, जिससे उन्होंने उन युगों के संस्कृति से जुड़ी साहित्य की विकास भी की। एकमात्र 'थेरी गाथा' में लगभग 50 भिक्षुणियों की कविताएँ संग्रहित हैं। उपर्युक्त विवेचन से प्रकट हुआ है कि वैदिक समय के बाद भी कुछ कन्याएं अध्ययन की दिशा में कमी थी, लेकिन उच्च वर्ग की स्त्रीयाँ शिक्षा को प्राप्त करती रहीं। उनकी शिक्षा मुख्यत: कलाओं तक सीमित थी-नृत्य, संगीत और कवितानात्मक

[7] पाहई 1.70, बद्धवही 1.86, रेवा 1.87, 1.90 आदि ।

[8] ऐसी कवयित्रियों में शील-भट्टारिका, देवी, विजयांका आदि प्रमुख हैं। इनके विषय में जल्हण की सूक्ति-मुक्तावली में राजशेखर द्वारा रचित प्रशस्तियाँ मिलती हैं। अन्य उच्च कोटि की स्त्री-साहित्यकारों के परिचय के लिए देखिए चक्रवर्ती और डे द्वारा रचित हिस्ट्री आफ संस्कृत लिटरेचर, 10.477।

[9] काव्य-मीमांसा दशम अध्याय से।

साहित्य में स्त्रियों का विशेष रुचि था। उस युग में उच्च वर्ग की लड़कियों के लिए उपर्युक्त कलात्मक ज्ञान आवश्यक था।

क्षत्रिय वर्ग की कन्याएं युद्ध-विद्या-प्रशिक्षित होने की रीति को प्रचलित किया गया था। रामायण के अनुसार, कैकेयी अस्त्र-शस्त्र विद्या में निपुण थी। ब्राह्मण परिवारों में सीधा-रूप से शिक्षा का आरंभ लड़कियों के लिए वालक के साथ भी किया जाता था। लड़कियों के विवाह की आयु की कमी के कारण, उनकी शिक्षा मुख्यतः समाप्त हो जाती थी।

निष्कर्ष

भारतीय ज्ञान परम्परा की विशेषता यह है कि इसने ज्ञान को किसी एक लिंग तक सीमित नहीं किया। पुराने समय में स्त्रियाँ सिर्फ गृहस्थी तक सीमित नहीं थीं, बल्कि उन्होंने वेदों के मन्त्रों की रचना की, यज्ञों में ऋत्विज के रूप में कार्य किया और ब्रह्मविद्या पर गहन संवाद भी किया। ऋग्वेद में घोषा, अपाला, लोपामुद्रा, विश्ववारा जैसी ऋषिकाएं नामक स्त्रियाँ हैं जिन्होंने पुराने समय में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उनके मन्त्र स्पष्ट रूप से बताते हैं कि ज्ञान और आध्यात्मिक जिज्ञासा स्त्री पुरुष दोनों के लिए समान रूप से उपलब्ध थी। यह दिखाता है कि प्राचीन साहित्य में स्त्रियों को गर्व के साथ एक बराबरी का स्थान दिया गया था।

उपनिषदों में गार्गी वाचक्नवी और मैत्रेयी के संवाद इस बात का साक्ष्य है कि भारतीय साहित्य में स्त्रियों को महत्वपूर्ण भूमिका दी गई थी। गार्गी ने याज्ञवल्क्य से ब्रह्माण्ड के मूल तत्व पर प्रश्न करके दिखाया कि एक स्त्री भी गूढ़ दार्शनिक चिन्तन कर सकती है। गार्गी और मैत्रेयी के संवाद से हमें यह सिखने को मिलता है कि स्त्री पुरुष दोनों ही आत्म-ज्ञान की उत्कृष्टता तक पहुंच सकते हैं और अपनी जिज्ञासा को संतुष्ट करने के लिए साधन कर सकते हैं।

याज्ञवल्क्य, यदिदं सर्वं जल एव।" बृहदारण्यक उपनिषद् 3.6.1 इसी प्रकार मैत्रेयी ने यह जिज्ञासा की कि अमृतत्व किससे प्राप्त हो सकता है- **"यदरे न मृतेन किं तदरेन कुर्यात्।"** (बृहदारण्यक उपनिषद् 2.4.12) ये उदाहरण स्पष्ट करते हैं कि वैदिक और उपनिषदिक युग में स्त्री शिक्षा को कोई अवरोध नहीं था। बाद के काल में, कुछ सामाजिक बंधन उत्पन्न हुए हों, पर मूल भारतीय चिंतन में यह बताया गया कि नारी भी ब्रह्मविद्या और लौकिक शिक्षा की समाप्ति है। जब हम स्त्री शिक्षा और समान अधिकार की चर्चा करते हैं, तो यह प्राचीन परंपरा हमें प्रेरित करती है।

अगर हजारों वर्ष पहले भारतीय समाज स्त्री को मंत्रद्रष्टा, ऋत्विज, दार्शनिक और शिक्षिका के रूप में स्वीकार कर सकता था, तो आधुनिक समाज में भी हमें नारी के बौद्धिक और आध्यात्मिक अधिकारों

की पूर्ण सम्मान देना चाहिए। **या देविषु नित्यं विभजत्यन्यां, सा मे ज्योतिः प्रचयत्वायुश्च।** अथर्ववेद 14.1.64 यह मन्त्र नारी में निहित दिव्य ज्ञान और शक्ति को स्वीकार करता है। इस प्रकार, भारतीय ज्ञान परम्परा का गहन चिन्तन हमें यह सिखाता है कि शिक्षा का अधिकार सर्वजन के लिए है। स्त्री को ज्ञान का अधिकार देना केवल आधुनिक मूल्य नहीं, बल्कि हमारी प्राचीन सांस्कृतिक जड़ है। इस गौरवशाली परम्परा को आत्मसात करना ही सच्चा प्रगति-पथ है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

ऋग्वेद संहिता (भाग 1–4), संपादक: सायणाचार्य भाष्य सहित. प्रकाशक: चौखम्बा संस्कृत सीरीज, वाराणसी, संस्करण: नवीनतम संस्कृत हिन्दी अनुवाद संस्करण (2019, 15वाँ पुनर्मुद्रण)

बृहदारण्यक उपनिषद्, टीका एवं अनुवाद: डॉ. बलदेव उपाध्याय. प्रकाशक: चौखम्बा विद्या भवन, वाराणसी. संस्करण: 2015, द्वितीय संस्करण

अथर्ववेद संहिता (सायण भाष्य सहित), संपादक: पं. श्रीराम शर्मा आचार्य. प्रकाशक: अखिल विश्व गायत्री परिवार, शांतिकुंज, हरिद्वार. संस्करण: 2006, पुनर्मुद्रण

Vedic Women: Rishika's and Philosophers, Dr. S.C. Vasu (English Compilation). Nag Publishers, Delhi. Edition: Reprint 2017

भारतीय नारी और वेदकालीन संस्कृति, लेखक: डॉ. शारदा अरविन्द. प्रकाशक: भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली. संस्करण: 2014, तृतीय संस्करण

Women in the Vedic Age, R.C. Majumdar. Motilal Banarsidass, Delhi. Edition: Reprint 2016

*Corresponding Author: Dr. Daulatram

E-mail: daultsharma01@gmail.com
Received: 02 June,2025; Accepted: 27July 2025. Available online: 30 July, 2025
Published by SAFE. (Society for Academic Facilitation and Extension)
This work is licensed under a Creative Commons Attribution-Noncommercial 4.0 International License